Shabar Mantra Sadhana Evam Siddhi

।।शाबर मंत्र साधना एवं सिद्धि।।



सम्पूर्ण तन्त्र शास्त्रों के प्रणेता भगवान शंकर ही माने जाते हैं। शाबर तंत्र का उद्भव भी उन्हीं भोले नाथ के मुख से ही हुआ है। ये मंत्र अंचलीय अथवा ग्रामीण भाषा में होते हैं। प्रायः देखने में आता है कि इनका कोई अर्थ उद्भाषित नहीं होता है, लेकिन इनका प्रभाव बहुत सटीक होता है।

वैदिक मंत्रों की भांति इनमें बहुत लम्बा अनुष्ठान करने की आवश्यकता नहीं होती है। इन्हें किसी विशिष्ट काल में थोड़े ही संख्या में जप करने से कार्य पूर्ण हो जाता है। इनकी साधना हेतु साधक को अल्प अवधि में, थोड़े से परिश्रम से सिद्धि प्राप्त हो जाती है। मंत्रों की सरलता और सुगमता होने के साथ-साथ ही इनमें परम चमत्कारी गुण भी विद्यमान हैं। इनमें विभिन्न प्रांतों के क्षेत्रीय भाषाओं में षट्कर्मो, जैसे-शांतिकरण, वशीकरण, आकर्षण, उच्चाटन, विद्वेषण तथा मारण कर्मों के विधानों का उल्लेख आता है, जो साधकों के लिए वरदान स्वरूप प्रतीत होते हैं।

शाबर मंत्रों की साधना में गुरू का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसके अतिरिक्त इसमें सम्बन्धित साधक अथवा देवी-देवता को सौगंध देकर कार्य पूर्ण कराने का भी विधान है। इसी लिए मंत्रों के अन्त में 'मेरी भक्ति गुरू की शक्ति' अथवा 'लोनी चमारी की आन' जैसे वाक्य जुड़ें होते हैं।

कुछ साधक पुस्तकों अथवा किन्हीं अन्य श्रोतों से मंत्र प्राप्त करके सीधे जप आरम्भ कर देते हैं, यह उचित नहीं है। कुछ मंत्र इतने प्रभावशाली होते हैं, जो साधक के लिए जी का जंजाल बन जाते हैं। अतः मेरा परामर्श है कि जब भी इन मंत्रों की साधना करें अपने गुरू से परामर्श अवश्य लें और उनके निर्देशानुसार ही साधना आरम्भ करें।

‘शाबर मंत्र की सिद्धि हेतु निम्नलिखित मंत्र का २१ बार जप करके उसके उपरान्त २१ बार ही गुग्गुल और घी की आहुति देनी चाहिए।शाबर मंत्र की सिद्धि प्रदान करने वाले इस मंत्र को **मेरू मंत्र सर्वार्थ साधक** कहा जाता है। मंत्र इस प्रकार हैः-

‘ गुरू सठ, गुरू सठ, गुरू है वीर, गुरू साहब सुमरौं बड़ी भांत।

सिंगी टोरों बन कहों, मन नांउ करतार। सकल गुरू की हर भजे, घट्टा पकर उठ जाग, चेत सम्भार श्री परम हंस ।।

तदोपरान्त जिस मंत्र को आपको सिद्ध करना हो, उस मंत्र का यथा निर्देश जप विधि-विधान पूर्वक करें।

यंहा कुछ सिद्ध मंत्रों का उल्लेख मैं कर रहा हूं ।

सम्मोहन हेतु मंत्र

ओम् क्लीं ऐं सौं ह्रीं श्रीं ग्लौं सकल जगन्मोहिनि, मदनोन्मादिनि क्लीं एहि एहि क्लीं क्लीं सम्मोहय सम्मोहय

बुद्धिं नाशय नाशय। जीव मोहनी लागो मोह जिनु जिनु जावो मकरे तो मोहं आदिशक्ति को आण राजा मन्मथ की आन।

फुरो आगम मंत्रो मेरी भक्ति गुरू की शक्ति ईश्वर तेरी वाचा।।

विधान :- साधक को पहले सप्तमातृकाओं का निर्माण करके उनका पूजन अर्चन करना चाहिए। लगातार २१ दिनों तक मंत्रजाप करने से सम्मोहन सिद्ध होता है। तद्ोपरान्त किसी भी खाने-पीने की वस्तु पर, चंदन-सिन्दूर पर या किसी वस्त्रादि पर मात्र २१ बार मंत्र का अभिमंत्रण करने से सम्मोहन में सफलता प्राप्त होती है।

सप्तमातृकाओं का निर्माण घी में सिंदूर मिलाकर क्रमशः उपर से नीचे की ओर सात बिन्दियां बनानी चाहिएं।

o
o o
o o o
o o o o
o o o o o
o o o o o
o o o o o o o

एक बात साधक को अवश्य ध्यान रखनी चाहिए कि ऐसे मंत्रों का प्रयोग केवल अच्छे कार्यों के लिए ही करें, क्योंकि अनुचित कार्यों में अक्सर असफलता ही प्राप्त होती

है। ईश्वर उनकी ही मदद करते हैं, जो सत्कार्यों का निष्पादन करना जानते हैं।

वशीकरण हेतु मंत्र

इस मंत्र को सुगम-श्यामल मंत्र कहा जाता है। त्रैलोक्य को वशीभूत करने हेतु इस मंत्र का प्रयोग किया जाता है। आपने देखा होगा कि किसी-किसी साधु, प्रवचन कर्ता, कथा वाचक अथवा किसी सन्यासी के प्रवचन करने के समय जबरदस्त संख्या में लोगों की भीड़ उपस्थित रहती है। यदि सामान्य रूप से देखा जाये तो प्रवचनों में कोई विशेष बात नहीं रहती, केवल वहीं बातें रहती हैं, जिससे हर कोई व्यक्ति परिचित रहता है। परन्तु ऐसी ही बातें सुनकर लोगों की भीड़ बनी रहती हैं। यह सामान्यतः वशीकरण द्वारा ही सम्भव है। यू ंतो ऐसे अनेकों मंत्र हैं, परन्तु यंहा जो मंत्र मैं लिख रहा हूॅ, वह उच्च कोटि का शाबर मंत्र है और इस मंत्र के प्रभाव से किसी भी जन का बचना सम्भव नहीं है।

मंत्र :- ओम् ऐं क्लीं सौं सर्वजन-मनोहारिणि मतंग कुल मंगलांगि असकृन्मदिरा-वोद-वदने अनौपम्य-चरिते ऐं क्लीं ह्रीं गुला-मातंगी जन-मनोरंजनकारि मनभेदि भगवती गुवुक्ति-काम गति फुरो ईश्वर मन्त्रते वीरवाचा।।

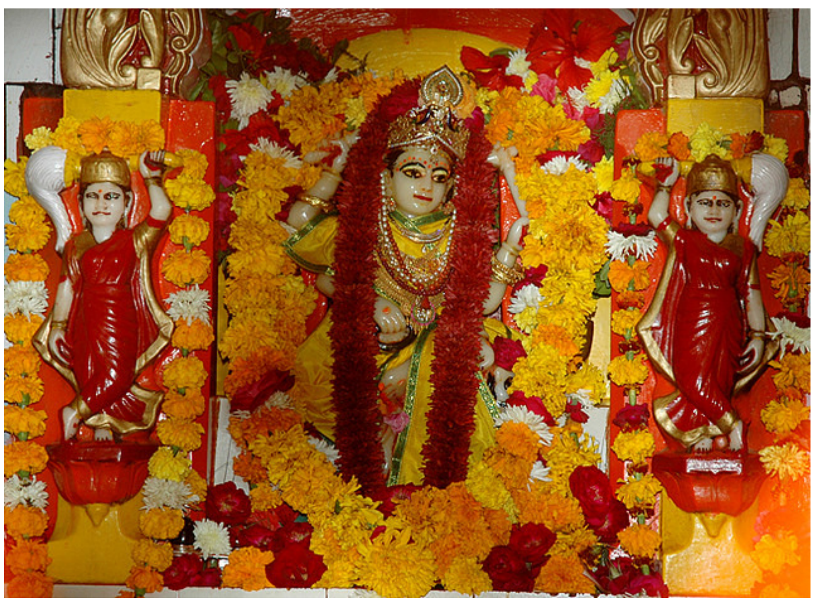
विधानः- इस मंत्र को सिद्ध करने के लिए साधक को चाहिए कि वह किसी काली, चंडिका अथवा मातृका के मंदिर में कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि से लेकर कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि तक प्रातः, मध्यान्ह एवं सायं काल, अर्थात तीनों संध्या काल में इस मंत्र का एक सौ की संख्या में जप करना चाहिए। इसके बाद चंडिका मंदिर में ही उपरोक्त मंत्र के द्वारा कनेर के फूलों से उनका पूजन करना चाहिए। इस मंत्र से अभिमंत्रित चंदन, भस्म आदि का तिलक करने से त्रैलोक्य भी साधक के वशीभूत हो जाता हैं।

साधक को चाहिए कि कंही भी जाने से पूर्व उपरोक्त मंत्र का एक सौ आठ बार जप करके ही जाए। इससे कार्य की सिद्धि अवश्य ही होती है। किसी विशेष कार्य पर जाने से पूर्व उसे चंदन, भस्म, अक्षत तथा सिंदूर आदि को २१ बार अभिमंत्रित करके धारण करने से सर्व जन का वशीकरण होता है और साधक को उसके कार्य में सफलता प्राप्त होती है।

Ma Baglamukhi Bhakt Mandaar Mantra Evam Puja Vidhi

माँ बगलामुखी भक्त मंदार मंत्र एवं पूजा विधि

(उन्नीसाक्षरी मंत्र - धन-समृद्धि प्रदायक विशेष प्रयोग)



भगवती बगलामुखी की उपासना कलियुग में सभी कष्टों एवं दुखों से मुक्ति प्रदान करने वाली है। संसार में कोई कष्ट अथवा दुख ऐसा नही है जो भगवती पीताम्बरा की सेवा एवं उपासना से दूर ना हो सकता

हो, बस साधकों को चाहिए कि धैर्य पूर्वक प्रतिक्षण भगवती की सेवा करते रहें।

भगवती बगलामुखी का यह भक्त मंदार मंत्र साधकों की हर मनोकामनां पूर्णं करने वाला है। इस मंत्र का विशेष प्रभाव यह है कि इसे करने वाले साधक को कभी भी धन का अभाव नही होता। भगवती की कृपा से वह सभी प्रकार की धन सम्पत्ति का स्वामी बन जाता है। आज के युग में धन के अभाव में व्यक्ति का कोई भी कार्य पूर्ण नही होता। धन का अभाव होने पर ना ही उसका कोई मित्र होता है और ना ही समाज में उसे सम्मान प्राप्त होता है। इस मंत्र के प्रभाव से धीरे-धीरे साधक को अपने सभी कार्यों में सफलता मिलनी प्रारम्भ हो जाती है एवं धन का आगमन होना प्रारम्भ हो जाता है।

ऐसा भी देखने में आता है कि कुछ लोग धन तो बहुत अधिक कमातें हैं लेकिन उनके पास बचता कुछ भी नही है, बिना वजह उनके धन का नाश होता है। ऐसे लोगो की जब हम कुण्डली देखते हैं तो षष्ठ(कर्ज) एवं द्वादश(व्यय) भाव शुभ ग्रहों द्वारा प्रभावित होते हैं अथवा एकादश (लाभ) भाव का स्वामी द्वादश (व्यय) भाव में अथवा द्वादश भाव के स्वामी के प्रभाव में होता है, जिस कारण वो जितना भी धन कमाते हैं उतना ही किसी ना किसी रूप में व्यय हो जाता है।

भगवती पीताम्बरा इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को चलाने वाली शक्ति हैं। नवग्रहों को भगवती के द्वारा ही विभिन्न कार्य सौपे गये हैं जिनका वो

पालन करते हैं। नवग्रह स्वयं भगवती की सेवा में सदैव उपस्थित रहते हैं। जब साधक भगवती की उपसना करता है तो उसे नवग्रहों की विशेष कृपा प्राप्त होती है। यदि साधक को उसके कर्मानुसार कहीं पर दण्ड भी मिलना होता है तो वह दण्ड भी भगवती की कृपा से न्यून हो जाता है एवं जगदम्बा अपने प्रिय भक्त को इतना साहस प्रदान करती हैं कि वह दण्ड साधक को प्रभवित नही कर पाता। इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में कोई भी इतना शक्तिवान नही है जो जगदम्बा कें भक्तो का एक बाल भी बांका कर सके। कहने का तात्पर्य यह है कि कारण चाहें कुछ भी हो भगवती बगलामुखी की उपासना आपको किसी भी प्रकार की समस्या से मुक्त करा सकती है।

मां की कृपा को वही जान पाया है जो उनकी शरण में गया है, इसीलिए अपने शब्दों को यही पर विराम देते हुए मां भगवती से प्रार्थना करता हूं कि आप सभी को भगवती अपनी शरण प्रदान करें एवं आपका कल्याण करे।

बगलामुखी साधना का परिचय

भगवती की साधना में आगे बढ़ते हुए जब साधक अष्टाक्षरी मंत्र का अनुष्ठान पूर्ण कर लेता है उसके पश्चात उन्नीसाक्षरी मंत्र (भक्त मंदार मंत्र) की दीक्षा साधक को दी जाती है। जो लोग पहली बार

भगवती पीताम्बरा की साधना के बारे में पढ़ रहे हैं उन्हें थोड़ा परिचय दे देता हूं -

भगवती पीताम्बरा की उपासना में क्रम दीक्षा होती है। क्रम दीक्षा का अर्थ है क्रम से भगवती के विभिन्न मंत्रो को गुरूमुख से प्राप्त करना। यह क्रम इस प्रकार है -

एकाक्षरी मंत्र (बीज मंत्र), चतुर्क्षरी मंत्र, अष्ठाक्षरी मंत्र, उन्नीसाक्षरी मंत्र (भक्त मंदार मंत्र), छत्तीसाक्षरी मंत्र(मूल मंत्र) ।

सर्वप्रथम गुरूदेव द्वारा एकाक्षरी मंत्र (बीज मंत्र) साधक को दिया जाता है जिसका सवा लक्ष (1,25,000) जप साधक द्वारा किया जाता है। इसके पश्चात क्रम से चतुर्क्षरी, अष्ठाक्षरी, उन्नीसाक्षरी, छत्तीसाक्षरी मंत्र साधको को दिया जाता है एवं प्रत्येक मंत्र का सवा लक्ष (1,25,000) जप साधक को करना होता है। इस प्रकार सभी मंत्रों का जप हो जाने पर साधक गुरूदेव से पूर्णाभिषेक दीक्षा प्राप्त करता है।

यहां पर मैं भगवती पीताम्बरा के उन्नीसाक्षरी मंत्र का वर्णन कर रहा हूं जिसे भक्त मंदार मंत्र भी कहा जाता है।

भक्त मंदार मंत्र

मंत्र - श्रीं ह्रीं ऐं भगवती बगले मे श्रियम् देहि-देहि स्वाहा ।

Shreem Hreem Aym(Aim) Bhagwati Bagle May Shriyam Dehi Dehi Swaha

(कृपया दीक्षित साधक ही इसका जप करें। जिनकी दीक्षा नही हुई है वो सबसे पहले दीक्षा ग्रहण करें)

इस मंत्र का जप स्फटिक अथवा कमलगट्टे की माला पर किया जाता है।

भक्त मंदार मंत्र का अनुष्ठान

जब साधक का एकाक्षरी, चतुराक्षरी एवं अष्टाक्षरी मंत्र का अनुष्ठान पूर्ण जो जाये तो उसके बाद गुरूदेव से उन्नीसाक्षरी मंत्र (भक्त मंदार मंत्र) की दीक्षा लेनी चाहिए। अनुष्ठान करने की विधि नीचे दे रहा हूं -

मंत्र दीक्षा एवं गुरू आज्ञा

अनुष्ठान करने से पूर्व अपने गुरू से **मंत्र दीक्षा** एवं **आज्ञा** अवश्य लेनी चाहिए एवं अनुष्ठान पूर्ण हाने के पश्चात उन्हे सामर्थ्यानुसार वस्त्र एवं दक्षिणा अवश्य देनी चाहिए। अपने माता पिता से भी आशीर्वाद अवश्य लें चूंकि उन्ही के कारण आप इस संसार में आयें हैं । जिन लोगो के ऊपर माता-पिता एवं गुरू की कृपा है उनके ऊपर माँ की कृपा स्वयं ही हो जाती है अपने माता-पिता एवं गुरू को रूष्ट कर आप माँ की

कृपा कभी भी प्राप्त नही कर सकते।

मंत्र जप

संकल्प लेकर भक्त मंदार मंत्र का एक लाख पच्चीस हजार (1,25,000 मंत्रो अथवा 1250 माला) की संख्या में स्फटिक अथवा कमलगट्टे की

माला पर जप करना चाहिए। यह जप आप 9,11,14,18,21,27,31,36,41 दिन में कर सकते हैं।

हवन

मंत्र जप के पश्चात (12,500 मंत्रो अथवा 125 माला) से हवन अवश्य करना चाहिए, जो लोग हवन करने में समर्थ नही हैं उन्हे अपने गुरूदेव से अनुष्ठान के पश्चात हवन करने का आग्रह करना चाहिए । यदि 125 माला से हवन करने का सामर्थ्य ना हो (धन का अभाव हो) तो हवन के नाम की 125 माला का मंत्र जप कर लेना चाहिए एवं कुछ माला का हवन करवा लेना चाहिए ।

तर्पण

मंत्र जप करने के पश्चात 1250 मंत्रो अथवा 13 माला से तर्पण करना चाहिए । तर्पण करने का मंत्र है "श्रीं ह्रीं ऐं भगवती बगले मे श्रियम् देहि-देहि स्वाहा तर्पयामि" । इसके लिए एक बड़ा पात्र (बर्तन) ले, जिसमें १ से २ लीटर पानी आ जाये। उसके पश्चात उसमें थोड़ा गंगा जल लें । उसके बाद उसमें ऊपर तक पानी भर लें एवं थोड़ी हल्दी, शहद, शक्कर, केसर, दुध मिला लेना चहिए । उसके पश्चात जिस प्रकार सुर्य को हाथों से अंजली में जल भरकर अर्घ्य दिया जाता है उसी प्रकार सीधे हाथ से अंजली बनाकर " श्रीं ह्रीं ऐं भगवती बगले मे श्रियम् देहि-देहि स्वाहा तर्पयामि " बोलते हुए उसी पात्र में जल को छोड़ देना चाहिए । तर्पण करते हुए मंत्र जप उल्टे हाथ से करना चाहिए एवं सीधे

हाथ से तर्पण करना चाहिए । तर्पण के पश्चात इस जल को पौधों में डाल देना चाहिए ।

मार्जन

तर्पण के पश्चात 125 मंत्रो अथवा 2 माला से मार्जन करना चाहिए। मार्जन करने का मंत्र है "श्रीं ह्रीं ऐं भगवती बगले मे श्रियम् देहि-देहि स्वाहा मार्जयामि" । इसके लिए थोड़ी सी कुशा लें। एक पात्र में गंगा जल लेकर उस कुशा से भगवती के यंत्र पर "श्रीं ह्रीं ऐं भगवती बगले मे श्रियम् देहि-देहि स्वाहा मार्जयामि" बोलते हुए गंगा जल की छींटे दे। मार्जन भी सीधे हाथ से करना चाहिए एव उल्टे हाथ से जप करना चाहिए। यदि कुशा उपलब्ध ना हो तो पीले फूल का भी उपयोग किया जा सकता है।

कन्या अथवा ब्राहमूण भोजन

मार्जन करने के पश्चात ११ कन्याओं को भोजन कराना चाहिए एवं उनकी प्रसन्नता के लिए उन्हें सामर्थ्यानुसार वस्त्र एवं दक्षिणा देनी चाहिए ।

पूजा का क्रम

१. आसन पूजा, आचमन एवं शुद्धि-करण

२. गुरू पूजन

३. गणेंश पूजन (हरिद्रा गणपति पूजन)

४. **भैरव पूजन** - शक्ति की उपासना में भैरव पूजन का विशेष महत्व होता है माँ बगलामुखी के भैरव मृत्युंजय भैरव हैं इसलिए भगवती की उपासना से पहले भैरव जी से आज्ञा अवश्य लेनी चाहिए एवं जप के अन्त में दशांश मृत्युंजय भैरव मंत्र " हौं जूं सः " का जप अवश्य करना चाहिए ।

५. **ध्यान :** इसके पश्चात भगवती पीताम्बरा का ध्यान करें कि माँ आपके हृदय में सहस्रदल कमल के फूल पर विराजित हैं। माँ के चरणों का ध्यान करते हुए मन ही मन उनके चरणों में पीले पुष्प अर्पित करें एवं उनसे सदैव अपने हृदय में निवास करने की प्रार्थना करें ।

६. **माँ का पूजनः** ध्यान करने के पश्चात सामर्थ्यानुसार गंध (इत्र), धूप, दीप, पुष्प, ताम्बूल (पान) चन्दन आदि माँ को समर्पित करें ।

७. **कवचः** इसके पश्चात माँ के कवच का पाठ करें। कवच का पाठ आपको साधना में आने वाली सभी विपत्तियों से दूर रखता है। कवच के पाठ से माँ का सान्निध्य प्राप्त होता है

८. **मंत्र जप** - कवच के पाठ के बाद विनियोग, न्यासादि करें एवं उसके पश्चात अपने मंत्र का जप सुनिश्चित संख्या में करें ।

९. **अन्य स्तोत्र एवं पाठ** - मंत्र जप के पश्चात यदि समय हो तो भगवती के हृदय स्तोत्र, अष्टोत्तरशतनाम, सहस्रनाम आदि का पाठ करना चाहिए ।

१०. **मृत्युंजय भैरव मंत्र** – अन्त में दशांश मृत्युंजय भैरव मंत्र " हौं जूं सः " का जप अवश्य करना चाहिए ।

११. **क्षमा याचना एवं जप समर्पण** – अन्त में माँ से क्षमा याचना करें । अपने सीधे हाथ में थोड़ा जल लेकर अपने द्वारा किये गये सभी मंत्र जप को माँ के बायें हाथ में समर्पित करें एवं जल को माँ के बायें हाथ में अथवा बगलामुखी यंत्र पर चढा दें ।

१२. अन्त में माँ को प्रणाम करते हुए अपने आसन के नीचे जल डालकर अपने माथे से लगायें एवं बायें पैर को पहले पृथ्वी पर रखते हुए बाद में दायें पैर को पृथ्वी पर रखें ।

१३. साधना करने के बाद कम से कम आधा घण्टे तक मौन अवश्य रखना चाहिए । इससे साधक का तप क्षीण नही होता ।

१४. अपने आसन एवं माला को किसी भी व्यक्ति को छूने नही देना चाहिए चूँकि इन दोनो में साधक की आध्यात्मिक उर्जा छुपी होती है ।

१५. एक साधक को कभी भी किसी की निन्दा नही करनी चाहिए और ना ही कभी अंहकार करना चाहिए । ये दोनो साधक को दैवीय कृपा से दूर करते हैं और साधक की सारी उर्जा का नाश कर देतें हैं

१६. साधकों को मेरा एक परामर्श और भी है कि वे जब भी माँ पीताम्बरा अथवा किसी अन्य के मंत्रों का जप करें तो उनके समक्ष अपनी कोई लालसा या इच्छा व्यक्त न करें। वे आद्याशक्ति हैं, सम्पूर्ण सृष्टि की अधिष्ठात्री हैं, उनसे किसी भी साधक के मन की इच्छा छुपी हुई नहीं है। अतः अपनी इच्छा व्यक्त करके स्वयं को हल्का बनाना है। जब साधक अपनी कोई इच्छा लेकर माँ के मंत्रों का जप करता है और संकल्प लेता है कि अपने अमुक कार्य की पूर्णता के लिए मैं अमुक देवी या देवता के इतनी संख्या में जप करूंगा और उसका वह कार्य पूर्ण हो जाता है तो माँ की कृपा भी वंही समाप्त हो जाती है। आपने किसी कार्य की सफलता अथवा किसी भी प्रकार की प्राप्ति के लिए किसी भी देवी अथवा देवता के एक निश्चित संख्या में जप करने का संकल्प लिया और आपका कार्य पूर्ण हो गया तो फिर भगवती या देवता से आपको कोई सम्बन्ध नहीं रह जाता है। क्योंकि यह एक मात्र विनिमय है, आदान-प्रदान है। एक ऐसा विनिमय जो दो व्यक्तियों के मध्य परस्पर होता है। आपने किसी को कुछ दिया उसने बदले में आपका कार्य कर दिया। इसके उपरान्त कोई व्यक्तिगत सम्बन्ध किसी प्रकार का नहीं रह जाता । आपको चाहिए कि आप जिस भी देवी-देवता का मंत्र जप करते हैं तो उसे केवल आप अपने देवता की प्रसन्नता के लिए कीजिए। यदि आपके मंत्र जप से आपका देवी-देवता प्रसन्न हो जाता है तो आपकी समस्त इच्छाएं आपके बिना व्यक्त किये ही पूर्ण हो जायेंगीं और अपने देवी-देवता से आपके सम्बन्ध भी प्रगाढ बने रहेगें। अतः आपको चाहिए

कि उनसे एकत्व करने का प्रयास करें न कि कुछ मांगने का। यदि आप ऐसा करते हैं तो मेरा वचन है कि आपकी प्रत्येक साधना पूर्णता को प्राप्त करेगी।

प्रारम्भिक पूजा के मंत्र एवं विधि

भगवती की साधना करने का विशिष्ट समय रात्रिकाल माना गया है इसलिए यदि हो सके तो रात्रि ६ बजे से २ बजे के बीच ही अपनी साधना करनी चाहिए । लेकिन यदि ऐसा सम्भव न हो सके तो अपने

समय की स्थिति के अनुसार समय निर्धारण कर लेना चाहिए, क्योंकि कुछ ना करने से अच्छा कुछ कर लेना है।

यह साधना घर में रहकर ही सम्पन्न की जा सकती है। साधना का स्थान शान्त एवं मनोरम होना चाहिए । साधना में बैठने से पूर्व स्नान कर लें यदि सम्भव ना हो तो हाथ-पैर धो सकते हैं। इस प्रकार बाह्‍य रूप से अपने आप को पवित्र कर लें। फिर पीले रंग का आसन बिछायें और स्वयं भी पीले वस्त्र धारण करें ।

इसके उपरान्त आसन पर बैठ जायें और मानसिक शुद्धि के लिए निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करें। अपने शरीर पर थोड़ा सा जल छिड़कें-

ओम् अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।।

अतिनील घनश्यामं नलिनायतलोचनम् ।

स्मरामि पुण्डरीकाक्षं तेन स्नातो भवाम्यहम् ।।

इसके पश्चात आचमन करें ।

सीधे हाथ में थोड़ा सा जल लें एवं यह मन्त्र पढ़ते हुए पी जायें

ओम् केशवाय नमः ।

पुनः सीधे हाथ में थोड़ा सा जल लें एवं यह मन्त्र पढ़ते हुए पी जायें

ओम् नाराणाय नमः ।

पुनः सीधे हाथ में थोड़ा सा जल लें एवं यह मन्त्र पढ़ते हुए पी जायें

ओम् माधवाय नमः ।

यह मन्त्र पढ़ते हुए हाथ धो लें ।

ओम् हृषीकेशाय नमः ।

इसके पश्चात आसन के नीचे हल्दी से एक त्रिकोण बनायें एवं यह मन्त्र पढ़ते हुए प्रणाम करें-

ओम् कामरूपाय नमः।

इसके पश्चात अपने आसन पर थोड़ा सा जल छिड़कें और निम्नलिखित मन्त्र पढ़ें-

ओम् पृथ्वि ! त्वया धृता लोका देवि ! त्वं विष्णुना धृता ।

त्वं च धारय मां नित्यं ! पवित्रं कुरू चासनम् ।।

यह मन्त्र पढ़ते हुए आसन को प्रणाम करें-

क्लीं आधार शक्त्यै कमलासनाय नमः।

इसके पश्चात थोड़ी पीली सरसो लें एवं निम्नलिखित मंत्र पढते हुए अपने चारो और फेंक दें । यह आपका रक्षा कवच बन जायेगा और कोई भी बाह्य शक्ति आपकी पूजा में विघ्न नही डाल पायेगी ।

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ।

ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञा ।।

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः र्सवतो दिशः ।

सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे ।।

इसके पश्चात दीपक प्रज्जवलित करें एवं निम्नलिखित मंत्र पढें -

भो दीप देवीरूपस्तवं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत ।

यावत् कर्म समाप्ति स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव ।।

इसके बाद मूल मंत्र से १:८:४ के अनुपात से अनुलोम-विलोम प्राणायाम करें। अर्थात् एक मूल मंत्र से पूरक, आठ मंत्रों से कुम्भक तथा चार मंत्रों से रेचक करें। यह क्रिया जितनी अधिक से अधिक की जा सके, उतना ही अच्छा है।

अब अपने गुरू का ध्यान करते हुए उनकी वन्दना करें-

अखण्ड मण्डलाकारं व्यापतं येन चराचरम् ।

तत पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरूवे नमः ।।

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानांजन शलाक्या ।

चक्षुरून्मीलितं येन तस्मै श्री गुरूवे नमः ।।

देवतायाः दर्शनं च करूणा वरूणालयं ।

सर्व सिद्धि प्रदातारं श्री गुरूं प्रणमाम्यहम् ।।

वराभय कर नित्यं श्वेत पद्म निवासिनं ।

महाभय निहन्तारं गुरू देवं नमाम्यहम् ।।

इसके उपरांत श्रीनाथ, गणपति, भैरव आदि का ध्यान करके उन्हें नमन करें, क्योंकि इनकी कृपा के अभाव में कोई भी साधना पूर्ण नहीं होती है-

श्री नाथादि गुरू त्रयं गणपतिं पीठ त्रयं भैरवं,

सिद्धौघं बटुक त्रयं पदयुगं दूतिक्रमं मण्डलम्।

वीरान्द्वयष्ट चतुष्कषष्टिनवकं वीरावली पंचकम्,

श्रीमन्मालिनि मंत्रराज सहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम्।।

वन्दे गुरूपद-द्वन्द्ववांग-मन-सगोचरम्,

रक्त शुक्ल-प्रभा-मिश्रं-तर्क्यं त्रैपुरं महः !

गुरूदेव का ध्यान करने के उपरान्त निम्नांकित मंत्रों से देवी-देवताओं को नमस्कार करें-

ओम् श्री गुरूवे नमः ।

ओम् क्षं क्षेत्रपालाय नमः ।

ओम वास्तु पुरूषाय नमः ।

ओम् विघ्न राजाय नमः ।

ओम् दुर्गाय नमः ।

ओम् विघ्न राजाय नमः ।

ओम शम्भु शिवाय नमः ।

ओम् भैरवाय नमः ।

ओम् बटुकायै नमः ।

ओम् ब्रह्मायै नमः ।

ओम् नैर्ऋतियै नमः ।

ओम् चक्रपाणायै नमः ।

ओम् विघ्न नाथायै नमः ।

ओम् ऋष्यै नमः ।

ओम् देवतायै नमः ।

ओम् वेद शास्त्रायै नमः ।

ओम् वेदार्थाय नमः ।

ओम् पुराणायै नमः ।

ओम् ब्राह्मणायै नमः ।

ओम् योगिन्यौ नमः ।

ओम् दिक्पालायै नमः ।

ओम् सिद्धपीठायै नमः ।

ओम् तीर्थायै नमः ।

ओम् मंत्र-तंत्र-यंत्रायै नमः ।

ओम् मातृकायै नमः ।

ओम् पंचभूतायै नमः ।

ओम् महाभूतायै नमः ।

ओम् सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ।

ओम् सर्वाभ्यो देवीभ्यो नमः ।

ओम् सर्वेभ्यो ऋषिभ्यो नमः ।

इसके पश्चात भैरव जी से भगवती की आराधना करने की अनुमति लें-

तीक्ष्णदन्त महाकाय कल्पान्तदहनोपम ।

भैरवाय नमस्तुभ्यम् अनुज्ञां दातुमर्हसि ।।

अब दस बार मुखशोधन मंत्र ऐं ह्रीं ऐं का जाप करें

इसके पश्चात बगलामुखी कुल्लुका ओम् हूं क्ष्रौं (Om Hoom Chraum) का दस बार सिर पर जाप करें ।

उपरोक्त दी गयी पूजा प्रारिम्भक पूजा है। इसके बाद भगवती का ध्यान, विनियोग मंत्र जप आदि करना चाहिए ।

पीताम्बरा साधना की सरल विधि

जिन साधको को संस्कृत का कम ज्ञान है एवं जिन्हे उपरोक्त दी गयी विधि कठिन प्रतीत होती है वो नीचे दी गयी विधि का प्रयोग करें - आसन पर बैठकर अपने गुरूदेव का ध्यान करें, इसके बाद गणेश जी का ध्यान करे, इसके बाद भैरव जी से भगवती की पूजा की आज्ञा लेकर भगवती का ध्यान करें, फिर मंत्र का विनियोग कर न्यास करें एवं मंत्र जप करें । मंत्र जप के बाद दशांश मृत्युंजय भैरव मंत्र “ हौं जूं सः ” का जप अवश्य करें । अन्त में अपनी सम्पूर्ण पूजा भगवती को समर्पित कर आसन से उठ जायें ।

Baglamukhi Ekakshari Beej Mantra Sadhana Vidhi

।। भगवती पीताम्बरा के एकाक्षरी बीज मंत्र का महात्म्य ।।



भगवती बगलामुखी (पीताम्बरा) के इस मंत्र को महामंत्र के नाम से जाना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि भगवती बगलामुखी की उपासना करने वाले साधक के सभी कार्य बिन कहे ही पूर्ण हो जाते हैं और जीवन की हर बाधा को वो हंसते हंसते पार कर जाते हैं। मैनें स्वयं अपने जीवन में अनेको चमत्कार देखें हैं, जिनको सुनकर कोई भी यकीन नही करेगा लेकिन भगवती पीताम्बरा अपने भक्तों के उपर ऐसे ही कृपा करती हैं।

एकाक्षरी मंत्र माँ पीताम्बरा का बीज मंत्र है। माँ पीताम्बरा की साधना इसी बीज मंत्र से प्रारम्भ होती है, एवं मेरी साधको को परामर्श है कि बीज मंत्र का नियमित रूप से कम से कम २१ माला का जप अवश्य करना चाहिए, क्योंकि बीज में ही मंत्र ही देवता के प्राण होते हैं जिस प्रकार बीज के बिना वृक्ष की कल्पना नही की जा सकती उसी तरह बीज मंत्र के जप के बिना साधना में सफलता के बारे में सोचना भी व्यर्थ है। भगवती की सेवा केवल मंत्र जप से ही नही होती है बल्कि उनके नाम का गुणगान करने से भी होती है । जिस प्रकार नारद ऋषि हर पल भगवान विष्णु का नाम जपते थे, उसी प्रकार सुधी साधको को माँ पीताम्बरा का नाम जप हर पल करना चाहिए एवं अन्य लोगो को भी उनके नाम की महिमा के बारे में बताना चाहिए । मैंने अपने जीवन का केवल एक ही उद्देश्य बनाया है कि माँ पीताम्बरा के नाम को हर व्यक्ति तक पहुंचाना है। आप सब भी यदि माँ की कृपा प्राप्त करना चाहते हैं तो आज से ही भगवती की उपासना को अपने जीवन में उतार लीजिए एवं माँ के नाम एवं उनकी महिमा का अधिक से अधिक प्रचार करना शुरू कर दीजिए। साधको के हितार्थ भगवती के बीज मंत्र की जानकारी यहां दे रहा हूँ, भगवती पीताम्बरा आप सब पर कृपा करें ।

ध्यान

वादी मूकति रंकति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति।

क्रोधी शान्तति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खंजति।।

गर्वी खवर्ति सर्व विच्च जडति त्वद्यन्त्राणा यंत्रितः।

श्रीनित्ये बगलामुखि! प्रतिदिनं कल्याणि! तुभ्यं नमः।।

बीज मंत्र - ह्ल्रीं (Hlreem)

विनियोगः- सीधे हाथ में जल लेकर केवल एक बार पढें

ओम् अस्य एकाक्षरी बगला मंत्रस्य ब्रह्म ऋषिः, गायत्री छन्दः, बगलामुखी देवताः, लं बीजं, ह्रीं शक्ति, ईं कीलकं, मम सर्वार्थ सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः-

- ओम् ब्रह्म ऋषये नमः शिरसि।
- गायत्री छंदसे नमः मुखे।
- श्री बगलामुखी देवतायै नमः हृदि।
- लं बीजाय नमः गुह्ये।
- ह्रीं शक्तये नमः पादयोः।
- ईं कीलकाय नमः सर्वांगे।

- श्री बगलामुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अंजलौ।

षडंगन्यासः

- ओम् ह्ल्रां हृदयाय नमः।
- ओम् ह्ल्रीं शिरसे स्वाहा।
- ओम् ह्ल्रूं शिखायै वषट्।
- ओम् ह्ल्रैं कवचाय हूं।
- ओम् ह्ल्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्।
- ओम् ह्ल्रः अस्त्राय फट्।

करन्यासः

- ओम ह्ल्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।
- ओम ह्ल्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा।
- ओम ह्ल्रूं मध्यमाभ्यां वषट्।
- ओम ह्ल्रैं अनामिकाभ्यां हूं।
- ओम ह्ल्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।
- ओम ह्ल्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

बीज मंत्र का अनुष्ठान

एक लाख पच्चीस हजार (1,25,000 मंत्रो अथवा 1250 माला) की संख्या में हल्दी की माला पर जप करना चाहिए । उसके पश्चात (12,500 मंत्रो अथवा 125 माला) से हवन अवश्य करना चाहिए, क्योंकि हवन से देवता को शक्ति मिलती है और मैंने स्वयं इसका अनुभव किया है कि हवन से माँ की कृपा बहुत जल्दी मिलती है। इसलिए हवन से बढकर कुछ नही है। यदि हो सके तो हवन नियमित रूप से करना चाहिए । जो लोग हवन करने में समर्थ नही हैं उन्हे अपने गुरू से अनुष्ठान के पश्चात हवन करने का आग्रह करना चाहिए इसके पश्चात (1250 मंत्रो अथवा 13 माला) से तर्पण करना चाहिए ।

तर्पण करने का मंत्र है "हल्रीं तर्पयामि" । इसके लिए एक बड़ा पात्र ले, जिसमें १ से २ लीटर पानी आ जाये। उसके पश्चात उसमें थोड़ा गंगा जल लें । उसके बाद उसमें ऊपर तक पानी भर लें एवं थोड़ी हल्दी, शहद, शक्कर, केसर, दुध मिला लेना चहिए । उसके पश्चात जिस प्रकार सुर्य को हाथों से अंजली में जल भरकर अर्घ्य दिया जाता है उसी प्रकार सीधे हाथ से अंजली बनाकर "हल्रीं तर्पयामि" बोलते हुए उसी पात्र में जल को छोड़ देना चाहिए । तर्पण करते हुए मंत्र जाप उल्टे हाथ से हल्दी की माला पर करना चाहिए एवं सीधे हाथ से तर्पण करना चाहिए ।

तर्पण के पश्चात (125 मंत्रो अथवा 2 माला) से मार्जन करना चाहिए । मार्जन करने का मंत्र है "हल्रीं मार्जयामि" । इसके लिए थोड़ी सी कुशा

लें। एक पात्र में गंगा जल लेकर उस कुशा से भगवती के यंत्र पर "ह्लीं मार्जयामि" बोलते हुए गंगा जल की छींटे दे। मार्जन भी सीधे हाथ से करना चाहिए एव उल्टे हाथ से हल्दी की माला पर जप करना चाहिए। यदि कुशा उपलब्ध ना हो तो पीले फूल का भी उपयोग किया जा सकता है।

मार्जन करने के पश्चात ११ कन्याओं को भोजन कराना चाहिए एवं उनकी प्रसन्नता के लिए उन्हें सामर्थ्यानुसार वस्त्र एवं दक्षिणा देनी चाहिए ।

अनुष्ठान करने से पूर्व अपने गुरू से आज्ञा अवश्य लेनी चाहिए एवं अनुष्ठान पूर्ण हाने के पश्चात उन्हे सामर्थ्यानुसार वस्त्र एवं दक्षिणा अवश्य देनी चाहिए। अपने माता पिता से आशीर्वाद अवश्य लें चूंकि उन्ही के कारण आप इस संसार में आयें हैं । जिन लोगो के उपर माता-पिता एवं गुरू की कृपा है उनके ऊपर माँ की कृपा स्वयं ही हो जाती है अपने माता-पिता एवं गुरू को रूष्ट कर आप माँ की कृपा कभी भी प्राप्त नही कर सकते।

....

Baglamukhi Chaturakshar Mantra Evam Pooja Vidhi in Hindi

माँ बगलामुखी चतुरक्षर मंत्र एवं पूजा विधि



।। भगवती पीताम्बरा के चतुरक्षर मंत्र का महात्म्य ।।

भगवती बगलामुखी (पीताम्बरा) के इस मंत्र का अनुष्ठान बीज मंत्र (ह्लीं) के अनुष्ठान के बाद किया जाता है। ऐसा देखा गया है कि बीज मंत्र का अनुष्ठान तो साधक बिना किसी समस्या के कर लेते हैं, लेकिन चतुरक्षर के अनुष्ठान में उन्हें थोड़ी समस्या का सामना करना पड़ता है। समस्या से यहां तात्पर्य भगवती द्वारा ली जाने वाली परीक्षा से है। इस मंत्र में कई बार ऐसी परिस्थिति पैदा हो जाती है कि आपका अनुष्ठान बीच में ही छूट जाये, जैसे कहीं अचानक बाहर जाना पड़ जाये अथवा किसी कार्य में इतनी अधिक व्यस्तता हो जाये कि उस दिन के निर्धारित जप

करने का समय ना मिले इत्यादि, लेकिन साधको को किसी भी परिस्थिति में किसी भी दिन जप नही छोड़ना है । यदि किसी कारण वश बाहर जाना भी पड़ भी जाये तो वही पर जाकर अपना जप पूर्ण करें एवं भगवती से क्षमा प्रार्थना करें । यदि आपने यह अनुष्ठान एक बार पूर्ण कर लिया तो भगवती की कृपा को प्राप्त करने से आपको कोई नही रोक सकता । भगवती पर विश्वास रखें एवं नियमित रूप से अपना जप करते रहें, आपको सफलता अवश्य मिलेगी ।

मन्त्र

ओम् आं ह्ल्रीं क्रों । (Om Aam Hlreem Krom)

(कृपया दीक्षित साधक ही इसका जप करें। जिनकी दीक्षा नही हुई है वो सबसे पहले दीक्षा ग्रहण करें)

विनियोग

ओम् अस्य श्री बगला चतुर्क्षरी मन्त्रस्य श्री ब्रह्म ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्री बगलामुखी देवता, ह्ल्रीं बीजं, आं शक्तिः, क्रों कीलकं, श्री बगलामुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ध्यान

कुटिलालक संयुक्तां मदाघूर्णित लोचनां,

मदिरामोद वदनां प्रवाल सदृशाधराम् ।।

सुवर्णकलश प्रख्य कठिन स्तन मण्डलां,

आवर्त्त विलसन्नाभिं सूक्ष्म-मध्यम संयुताम्।।

रम्भोरू पाद-पद्मां तां पीतवस्त्र समावृताम् ।

ऋष्यादिन्यासः-

- श्री ब्रह्म ऋषये नमः शिरसि।
- गायत्री छंदसे नमः मुखे।
- श्री बगलामुखी देवताय नमः हृदि।
- ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये।
- आं शक्तये नमः पादयोः।
- क्रों कीलकाय नमः सर्वांगे।
- श्री बगलामुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अंजलौ।

षडंगन्यासः-

- ओम् ह्लां हृदयाय नमः।
- ओम् ह्लीं शिरसे स्वाहा।
- ओम् ह्लूं शिखाय वषट्।
- ओम् ह्लैं कवचाय हूं।
- ओम् ह्लौं नेत्र त्रयाय वौषट्।
- ओम् ह्लः अस्त्राय फट्।

करन्यासः

- ओम् ह्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः।
- ओम् ह्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा।
- ओम् ह्लूं मध्यमाभ्यां वषट्।
- ओम् ह्लैं अनामिकाभ्यां हूं।
- ओम् ह्लौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।
- ओम् ह्लः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

चतुर्क्षर मंत्र का अनुष्ठान

जब साधक का एकाक्षरी मंत्र (बीज मंत्र - ह्लीं) का अनुष्ठान पूर्ण जो जाये तो उसके बाद गुरूदेव से चतुरक्षर मंत्र की दीक्षा लेनी चाहिए। चतुरक्षर मंत्र का अनुष्ठान भी एकाक्षर मंत्र के समान होता है किसी भी अनुष्ठान के ६ अंग होते हैं -

मंत्र दीक्षा एवं गुरू आज्ञा

अनुष्ठान करने से पूर्व अपने गुरू से **मंत्र दीक्षा** एवं **आज्ञा** अवश्य लेनी चाहिए एवं अनुष्ठान पूर्ण हाने के पश्चात उन्हे सामर्थ्यानुसार वस्त्र एवं दक्षिणा अवश्य देनी चाहिए। अपने माता पिता से भी आशीर्वाद अवश्य लें चूंकि उन्ही के कारण आप इस संसार में आयें हैं । जिन लोगो के उपर माता-पिता एवं गुरू की कृपा है उनके ऊपर माँ की कृपा स्वयं ही हो जाती है अपने माता-पिता एवं गुरू को रूष्ट कर आप माँ की कृपा कभी भी प्राप्त नही कर सकते।

मंत्र जप

संकल्प लेकर चतुरक्षर मंत्र का एक लाख पच्चीस हजार (1,25,000 मंत्रो अथवा 1250 माला) की संख्या में हल्दी की माला पर जप करना चाहिए । यह जप आप 9,11,14,18,21,27, 31,36,41 दिन में कर सकते हैं।

हवन

मंत्र जप के पश्चात (12,500 मंत्रो अथवा 125 माला) से हवन अवश्य करना चाहिए, जो लोग हवन करने में समर्थ नही हैं उन्हे अपने गुरूदेव से अनुष्ठान के पश्चात हवन करने का आग्रह करना चाहिए । यदि 125 माला से हवन करने का सामर्थ्य ना हो (धन का अभाव हो) तो हवन के नाम की 125 माला का मंत्र जप कर लेना चाहिए एवं कुछ माला का हवन करवा लेना चाहिए ।

तर्पण

मंत्र जप करने के पश्चात (1250 मंत्रो अथवा 13 माला) से तर्पण करना चाहिए । तर्पण करने का मंत्र है "ओम् आं ह्ल्रीं क्रों तर्पयामि" । इसके लिए एक बड़ा पात्र (बर्तन) ले, जिसमें १ से २ लीटर पानी आ जाये। उसके पश्चात उसमें थोड़ा गंगा जल लें । उसके बाद उसमें ऊपर तक पानी भर लें एवं थोड़ी हल्दी, शहद, शक्कर, केसर, दुध मिला लेना चहिए । उसके पश्चात जिस प्रकार सुर्य को हाथों से अंजली में जल भरकर अर्घ्य दिया जाता है उसी प्रकार सीधे हाथ से अंजली बनाकर " ओम् आं ह्ल्रीं क्रों तर्पयामि" बोलते हुए उसी पात्र में जल को छोड़ देना चाहिए । तर्पण करते हुए मंत्र जाप उल्टे हाथ से हल्दी की माला पर करना चाहिए एवं सीधे हाथ से तर्पण करना चाहिए । तर्पण के पश्चात इस जल को पौधों में डाल देना चाहिए ।

मार्जन

तर्पण के पश्चात (125 मंत्रो अथवा 2 माला) से मार्जन करना चाहिए । मार्जन करने का मंत्र है "ओम् आं ह्र्लीं क्रों मार्जयामि" । इसके लिए थोड़ी सी कुशा लें। एक पात्र में गंगा जल लेकर उस कुशा से भगवती के यंत्र पर "ओम् आं ह्र्लीं क्रों मार्जयामि" बोलते हुए गंगा जल की छींटे दे। मार्जन भी सीधे हाथ से करना चाहिए एव उल्टे हाथ से हल्दी की माला पर जप करना चाहिए। यदि कुशा उपलब्ध ना हो तो पीले फूल का भी उपयोग किया जा सकता है।

कन्या अथवा ब्राहमूण भोजन

मार्जन करने के पश्चात ११ कन्याओं को भोजन कराना चाहिए एवं उनकी प्रसन्नता के लिए उन्हें सामर्थ्यानुसार वस्त्र एवं दक्षिणा देनी चाहिए ।

Baglamukhi Ashtakshar Mantra Evam Pooja Vidhi in Hindi

माँ बगलामुखी अष्टाक्षर मंत्र एवं पूजा विधि



।। भगवती पीताम्बरा के अष्टाक्षर मंत्र का महात्म्य ।।

भगवती बगलामुखी (पीताम्बरा) के इस मंत्र का अनुष्ठान चतुराक्षर मंत्र के अनुष्ठान के बाद किया जाता है भगवती का यह मंत्र बहुत ही प्रभावशाली एवं चमत्कारी है इसकी महिमा को बताने के लिए अपने एक शिष्य के अनुभव को यहां लिख रहा हूं -

मेरे एक शिष्य को बहुत प्रयास करने के बाद भी कहीं कोई नौकरी नही मिल रही थी। बहुत अच्छी डिग्रियां हाने के बाद भी सभी जगह से उसे निराशा ही हाथ लग रही थी। तब मैनें उसे इस मंत्र का एक अनुष्ठान करने को कहा । उसने विधिवत अनुष्ठान शुरू किया और एक सप्ताह

बाद ही उसका बहुत बड़ी कम्पनी में चयन हो गया।

यह तो बस एक छोटा सा अनुभव है। इसके अलावा ऐसे बहुत सारे लोग हैं जिन्हें प्रेत बाधा, शत्रु बाधा, नौकरी, पारिवार में कलह, व्यवसाय में असफलता, विवाह, संतान ना होना, आदि समस्याओं में ऐसे परिणाम मिले हैं कि कोई साधारण मनुष्य तो विश्वास भी नही करेगा।

यहां साधको के हितार्थ भगवती के अष्टाक्षर मंत्र का विधान दे रहा हूं -

(कृपया दीक्षित साधक ही इसका जप करें। जिनकी दीक्षा नही हुई है वो सबसे पहले दीक्षा ग्रहण करें)

अष्टाक्षर मंत्र

ओम् आं ह्ल्रीं क्रों हुं फट् स्वाहा

om aam hlreem krom hum phat swaha

ध्यान

युवती च मदोन्मत्तां पीताम्बर-धरां शिवाम्।

पीतभूषण-भूषांगी समापीन-पयोधराम्।।

मदिरामोद-वदनां प्रवाल-सदृशाधराम्।

पानं पात्रं च शुद्धिं च विभ्रतीं बगलां स्मरेत्।।

विनियोगः-

ओम् अस्य अष्टाक्षरी बगला मंत्रस्य ब्रह्म ऋषिः, गायत्री छन्दः, बगलामुखी देवताः, लं बीजं, ह्रीं शक्ति, ईं कीलकं, मम सर्वार्थ सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः-

- श्री ब्रह्म ऋषये नमः शिरसि।
- गायत्री छंदसे नमः मुखे।
- श्री बगलामुखी देवताय नमः हृदि।
- लं बीजाय नमः गुह्ये।
- ह्रीं शक्तये नमः पादयोः।
- ईं कीलकाय नमः सर्वांगे।
- श्री बगलामुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अंजलौ।

षडंगन्यासः-

- ओम् ह्लां हृदयाय नमः।
- ओम् ह्लीं शिरसे स्वाहा।
- ओम् ह्लूं शिखायै वषट्।
- ओम् ह्लैं कवचाय हूं।

- ओम् ह्लौं नेत्र त्रयाय वौषट्।
- ओम् ह्लः अस्त्राय फट्।

करन्यासः-

- ओम् ह्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः।
- ओम् ह्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा।
- ओम् ह्लूं मध्यमाभ्यां वषट्।
- ओम् ह्लैं अनामिकाभ्यां हूं।
- ओम् ह्लौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।
- ओम् ह्लः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

अष्टाक्षर मंत्र का अनुष्ठान

जब साधक का एकाक्षरी एवं चतुराक्षरी मंत्र का अनुष्ठान पूर्ण जो जाये तो उसके बाद गुरूदेव से अष्टाक्षर मंत्र की दीक्षा लेनी चाहिए। अष्टाक्षर मंत्र का अनुष्ठान भी एकाक्षर एवं चतुरक्षर मंत्र के समान होता है। किसी भी अनुष्ठान के ६ अंग होते हैं -

मंत्र दीक्षा एवं गुरू आज्ञा

अनुष्ठान करने से पूर्व अपने गुरू से मंत्र दीक्षा एवं आज्ञा अवश्य लेनी चाहिए एवं अनुष्ठान पूर्ण हाने के पश्चात उन्हे सामर्थ्यानुसार वस्त्र एवं दक्षिणा अवश्य देनी चाहिए। अपने माता पिता से भी आशीर्वाद अवश्य लें चूंकि उन्ही के कारण आप इस संसार में आयें हैं । जिन लोगो के उपर माता-पिता एवं गुरू की कृपा है उनके ऊपर माँ की कृपा स्वयं ही हो जाती है। अपने माता-पिता एवं गुरू को रूष्ट कर आप माँ की कृपा कभी भी प्राप्त नही कर सकते।

मंत्र जप

संकल्प लेकर अष्टाक्षर मंत्र का एक लाख पच्चीस हजार (1,25,000 मंत्रो अथवा 1250 माला) की संख्या में हल्दी की माला पर जप करना चाहिए । यह जप आप 9,11,14,18,21,31,36,41 दिन में कर सकते हैं।

हवन

मंत्र जप के पश्चात (12,500 मंत्रो अथवा 125 माला) से हवन अवश्य करना चाहिए, जो लोग हवन करने में समर्थ नही हैं उन्हे अपने गुरूदेव से अनुष्ठान के पश्चात हवन करने का आग्रह करना चाहिए । यदि 125 माला से हवन करने का सामर्थ्य ना हो (धन का अभाव हो) तो हवन के नाम की 125 माला का मंत्र जप कर लेना चाहिए एवं कुछ माला का हवन करवा लेना चाहिए ।

तर्पण

मंत्र जप करने के पश्चात (1250 मंत्रो अथवा 13 माला) से तर्पण करना चाहिए । तर्पण करने का मंत्र है "ओमृ आं ह्रीं क्रों हुं फट् स्वाहा तर्पयामि" । इसके लिए एक बड़ा पात्र (बर्तन) ले, जिसमें १ से २ लीटर पानी आ जाये। उसके पश्चात उसमें थोड़ा गंगा जल लें । उसके बाद उसमें ऊपर तक पानी भर लें एवं थोड़ी हल्दी, शहद, शक्कर, केसर, दुध मिला लेना चहिए । उसके पश्चात जिस प्रकार सुर्य को हाथों से अंजली में जल भरकर अर्घ्य दिया जाता है उसी प्रकार सीधे हाथ से अंजली बनाकर " ओम् आं ह्रीं क्रों हुं फट् स्वाहा तर्पयामि " बोलते हुए उसी पात्र में जल को छोड़ देना चाहिए । तर्पण करते हुए मंत्र जाप उल्टे हाथ से हल्दी की माला पर करना चाहिए एवं सीधे हाथ से तर्पण करना चाहिए । तर्पण के पश्चात इस जल को पौधों में डाल देना चाहिए ।

मार्जन

तर्पण के पश्चात (125 मंत्रो अथवा 2 माला) से मार्जन करना चाहिए । मार्जन करने का मंत्र है " ओम् आं ह्रीं क्रों हुं फट् स्वाहा मार्जयामि" । इसके लिए थोड़ी सी कुशा लें। एक पात्र में गंगा जल लेकर उस कुशा से भगवती के यंत्र पर " ओम् आं ह्रीं क्रों हुं फट् स्वाहा मार्जयामि " बोलते हुए गंगा जल की छींटे दे। मार्जन भी सीधे हाथ से करना चाहिए

एव उल्टे हाथ से हल्दी की माला पर जप करना चाहिए। यदि कुशा उपलब्ध ना हो तो पीले फूल का भी उपयोग किया जा सकता है।

कन्या अथवा ब्राहमण भोजन

मार्जन करने के पश्चात ११ कन्याओं को भोजन कराना चाहिए एवं उनकी प्रसन्नता के लिए उन्हें सामर्थ्यानुसार वस्त्र एवं दक्षिणा देनी चाहिए ।

....

Devi Baglamukhi Hridaya Mantra

।। श्रीबगलामुखीहृदयमंत्र ।।

हृदय मंत्र को देवता का हृदय कहा जाता है इसके जप से देवता का सानिध्य बढ़ता है एवं सिद्ध होने पर दर्शन प्राप्त होते हैं अपने गुरूदेव से इस मंत्र की दीक्षा लेकर ही इसका जप करें । कई बार ऐसा देखा गया है कि कुछ लोग साधना के प्रारम्भ में ही हृदय मंत्र का जप शुरू कर देते है और जैसे ही देवता का सानिध्य बढ़ता है तो घबरा जाते है और डर से अपनी साधना बीच में ही छोड़ देतें है। इसलिए साधको को मेरा परामर्श है कि जब आपके गुरूदेव कहें तभी इसका जप करें । नये साधको को इसके स्थान पर बगलामुखी हृदय स्तोत्र का पाठ करना चाहिए ।

विनियोग- ॐ अस्य श्रीबगलामुखीहृदयमंत्रस्य नारदः ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीबगलामुखीदेवता, हल्रीं बीजम्, क्लीं शक्तिः, ऐं कीलकम्, श्रीबगलामुखी प्रसन्नार्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास

ॐ नारदऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे । श्रीबगलामुखी देवतायै नमः हृदि । हल्रीं बीजाय नमः गुह्ये । क्लीं शक्तये नमः पादयोः । ऐं कीलकाय नमः सर्वांगें

करन्यास

ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः । क्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा ।ऐं मध्यमाभ्यां वषट् । ह्लीं अनामिकाभ्यां हुम् । क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् । ऐं अस्त्राय फट् ।

हृदयादिन्यास-

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः । क्लीं शिरसे स्वाहा । ऐं शिखायै वषट् । ह्लीं कवचाय हुम् ।क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् । ऐं अस्त्राय फट्

।।ध्यानम्।।

बालभानुप्रतीकाशां नीलकोमलकुन्तलाम् ।
वन्देऽहं बगलां देवीं स्तम्भनास्त्ररुपिणीम् ।।

मंत्र- आं ह्लीं क्रों ग्लौं हुं ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं बगलामुखी ! आवेशय आवेशय, आं ह्लीं क्रों ब्रह्मास्त्ररुपिणी ! एहि एहि आं ह्लीं क्रों मम हृदये आवाहय आवाहय, सान्निध्यं कुरु कुरु आं ह्लीं क्रों ममैव हृदये चिरं तिष्ठ तिष्ठ, आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ।

Mantra : Aam Hlreem Krom Glaum Hoom Aim Kleem Shreem Hreem Baglamukhi ! Aaveshaya Aaveshaya, Aam Hlreem Krom BrahmastraRupini ! Aehi Aehi Aam Hlreem Krom Mama Hridaye Aavahaya Avahaya, Saanidhyam Kuru Kuru Aam Hlreem Krom Mameva Hridaye Chiram Tishth Tishth, Aam Hlreem Krom Hoom Phat Swaha

प्रयोग- इस मंत्र का प्रयोग किसी विशेष परिस्थिति में ही करना चाहिए क्योंकि यह बहुत ही अधिक ही तीव्र है। मंत्र प्रयोग के बाद बगला गायत्री एवं मूल मंत्र का अनुष्ठान देवी की प्रसन्नता के लिए अवश्य करना चाहिए ।

सांख्यायनतंत्र में इस दुर्लभ मंत्र की प्रशंसा करते हुए कहा है कि इसके स्मरण मात्र से महादरिद्र व्यक्ति भी लक्ष्मीवान् हो जाता है, जड़ व्यक्ति पण्डित हो जाता है, चोर भी बुद्धिमान बन जाता है एवं निन्दित मनुष्य भी कीर्तिवान् हो जाता है। शत्रु पर इस मंत्र का प्रयोग करने से साधक का प्रतिष्ठावान् शत्रु भी समाज में उपहास व असम्मान का पात्र बनता है। इस मंत्र की साधना जापक को समस्त प्रकार से संतुष्ट रखती है। आस्थापूर्वक निरन्तर जप करने से जापक को मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है।

- मंत्र को सिद्ध करने के पश्चात् उक्त मंत्र से बंध्या स्त्री के गर्भांग का मार्जन करने से छह मास की अवधि में गर्भधारण करके पुत्र को जन्म देती है। इसके साथ में बगला कवच से अभिमंत्रित जल स्त्री को देना चाहिए ।
- सूर्यादय के समय बगलाहृदय मंत्र से २१ बार अभिमंत्रित दूध पीने से छह मास के भीतर बन्ध्या भी पुत्र को जन्म देती है।

- शत्रु के अभिचारिक प्रयोग के कारण कोई भयानक रोग, व्याधि या महाभय उत्पन्न होने पर इस अमोघ मंत्र से १०८ बार अभिमंत्रित जल पीने से तुरन्त रोग या महाभय से छुटकारा मिलता है।

Ma Baglamukhi Manas Pujan

मां बगलामुखी मानस पूजन

ॐ लं पृथ्वी तत्वात्मकं गन्धं श्रीबगलामुखी प्रीतये समर्पयामि नमः ।
ॐ हं आकाश तत्वात्मकं पुष्पं श्रीबगलामुखी प्रीतये समर्पयामि नमः ।
ॐ यं वायु तत्वात्मकं धूपं श्रीबगलामुखी प्रीतये घ्रापयामि नमः ।
ॐ रं अग्नि तत्वात्मकं दीपं श्रीबगलामुखी प्रीतये दर्शयामि नमः ।
ॐ वं जल तत्वात्मकं नैवेद्यं श्रीबगलामुखी प्रीतये निवेदयामि नमः ।
ॐ सं सर्व तत्वात्मकं ताम्बूलं श्रीबगलामुखी प्रीतये समर्पयामि नमः ।

उपरोक्त बीज मंत्रो का चक्रो पर प्रभाव

लं बीज के जाप से मूलाधार चक्र जाग्रत होता है जो पृथ्वी तत्व का द्योतक है
वं बीज के जाप से स्वाधिष्ठान चक्र जाग्रत होता है जो जल तत्व का द्योतक है

रं बीज के जाप से मणिपुर चक्र जाग्रत होता है जो अग्नि तत्व का द्योतक है।
यं बीज के जाप से अनाहत चक्र जाग्रत होता है जो वायु तत्व का द्योतक है।
हं बीज के जाप से विशुद्धि चक्र जाग्रत होता है जो आकाश तत्व का द्योतक है।

Haridra Ganapati Sadhana

हरिद्रा–गणपति साधना



हरिद्रा गणपति मां बगलामुखी के अंग देवता है। इसलिए जो साधक बगलामुखी की आराधना करते हैं, उन्हें हरिद्रा गणपति की साधना, पूजा अवश्य करनी चाहिए। इनकी साधना करने से शत्रु का हृदय द्रवित होकर साधक के वशीभूत हो जाता है। इनकी साधना अभिचारिक कर्म को भी नष्ट करने के लिए की जाती है। यही कारण है कि मां त्रिपुरसुन्दरी के द्वारा स्मरण किये जाने पर हरिद्रा गणपति ने प्रकट होकर भण्डासुर दैत्य के द्वारा किये गये अभिचार यंत्र को नष्ट कर दिया था।

हरिद्रा हल्दी को कहा जाता है। सभी साधक जानते हैं कि विवाह आदि जैसे मंगल कार्यो में हल्दी पाउडर के लेप का प्रयोग किया जाता है। उसका कारण यह है कि हल्दी को अति शुभ, सुख-सौभाग्य दायक एवं विघ्न विनाशक माना जाता है। हल्दी अनेकों बीमारियों में भी अचूक अस्त्र की भांति कार्य करती है। इसीलिए हरिद्रा गणपति को अत्यन्त ही शुभ माना जाता है। काम्य प्रयोग में विशेष रूप से इनकी साधना मनवांछित विवाह, पुत्र प्राप्ति, मनोवांछित फल प्राप्ति एवं शत्रु को वश में करने के लिए की जाती है।

साधक को चाहिए कि भूत-शुद्धि आदि करने के उपरान्त वह संकल्प लेकर हरिद्रा गणपति जी के मंत्र का विनियोग करे। विनियोग निम्नवत् हैः-

विनियोग :- ओम् अस्य श्री हरिद्रा गणनायक मंत्रस्य मदन ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, हरिद्रागणनायको देवता आत्मनो-अभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

षडंग न्यास :-

ओम् हुं गं ग्लौं हृदयाय नमः।

ओम् हरिद्रागणपतये शिरसे स्वाहा।

वरवरद शिखायै वषट्,

सर्वजन हृदयं कवचाय हुम्।

स्तम्भय-स्तम्भय नेत्र त्रयाय वौषट्।

स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यान

पाशांकुशौ मोदकमेकदन्तं, करैर्दधानं कनकासनस्थम्।
हरिद्राखण्ड–प्रतिमं त्रिनेत्रं, पीतांशुकं रात्रि गणेश मीडे।।

अर्थात् जो अपने दाहिने हाथों में अंकुश और मोदक तथा बांये हाथों में पाश एवं दन्त धारण किये हुए सोने के सिंहासन पर विराजित हैं- ऐसे हल्दी जैसी आभा वाले, तीन नेत्रों वाले तथा पीले वस्त्र धारण करने वाले हरिद्रा गणपति की मैं वन्दना करता हूं।

मन्त्र :– ओम् हुं गं ग्लौं हरिद्रागणपतये वरवरद सर्वजन हृदयं स्तम्भय–स्तम्भय स्वाहा।

MANTRA : OM HOOM GAM GLAUM HARIDRAGANAPATAYE VARA-VARADA SARVAJANA HRIDAYAM STAMBHAYA-STAMBHAYA SWAAHA

पुरश्चरण विधान

सर्वप्रथम पीठ पर अंगपूजा, मातृका पूजन एवं दिक्पाल आदि का पूजन करें। गुड़ व हल्दी को पीसकर इनकी पिष्ठी से या केवल हल्दी चूर्ण से गणपति जी की प्रतिमा बनाकर उसका षोडशोपचार अथवा पंचोपचार पूजन करें। एक निश्चित अवधि निर्धारित करके, संकल्प लेकर हरिद्रा गणपति मंत्र का चार लाख की संख्या में जप करें। उसके दशांश अर्थात चालीस हजार मंत्रों से हवन करें। हवन के लिए सामग्री के रूप में

चावलों में पिसी हल्दी व थोड़ा सा शुद्ध घी मिला लें। हवन के उपरान्त इसका दशांश तर्पण एवं तर्पण का दशांश मार्जन करके मार्जन के दशांश ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए। ऐसा करने से हरिद्रा गणपति मंत्र समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति करने वाला हो जाता है।

प्रयोग विधि

किसी भी शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथी को कुंवारी कन्या द्वारा पीसी गयी हल्दी का पेस्ट बनाकर अपने शरीर पर उसका लेपन करें। तदोपरान्त स्वच्छ जल से स्नान करके हरिद्रा गणपति का पूजन करें। इसके बाद गणेश जी के सम्मुख बैठकर मंत्र के अन्त में 'तर्पयामि' शब्द लगाकर गणेश जी का तर्पण करें और उसके बाद उपरोक्त मंत्र का १००८ की संख्या में जप करें।

जप करने के बाद १०० मालपुओं से आहुतियां देकर ब्रह्मचारियों को भोजन करायें और कन्याओं तथा अपने गुरूदेव को भी सन्तुष्ट करके अपने अभीष्ट की प्राप्ति करें।

लाजा की सामग्री से होम करने पर कन्या को उत्तम वर की प्राप्ति एवं वर को उत्तम कन्या की प्राप्ति होती है।

किसी स्त्री को संतान न होती हो तो ऐसी स्त्री को चाहिए कि वह ऋतुस्नान अथवा मासिक धर्म के उपरान्त गणपति का पूजन करके चार तोला, लगभग ५० ग्राम गोमूत्र में दूधवच अर्थात् दूध में भिगोयी गयी वच एवं हल्दी पीस करके उसे १००० बार गणपति के उपरोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित करें, फिर कन्या एवं वटुकों, अर्थात् छोटे लड़कों को लड्डू

खिलाकर स्वयं द्वारा तैयार की गयी उपरोक्त दवाई का पान करे तो उसे योग्य पुत्र की प्राप्ति होती है।

इसके अतिरिक्त इस मंत्र की उपासना करने से वैरियों का वाणी स्तम्भन, उनकी गतिविधियों का स्तम्भन हो जाता है। इस मंत्र के प्रभाव से जल, अग्नि, चोर, सिंह एवं अस्त्र आदि का प्रकोप भी रोका जा सकता है।

हमारे शास्त्रों में करोड़ो मंत्र हैं लेकिन हर मंत्र आपके लिए सही नही है। शिष्य के लिए कौन सा मंत्र सही है इसका निर्णय केवल गुरू ही कर सकता है। इसलिए आप केवल अपने आप को योग्य गुरू को समर्पित कर दीजिए, इसके बाद गुरू स्वयं आपको सही राह दिखायेगा।

यदि आपको हमारे द्वारा लिखे गये लेख पंसद है तो कृपया हमें